मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५१ • दिसम्बर-२०२०

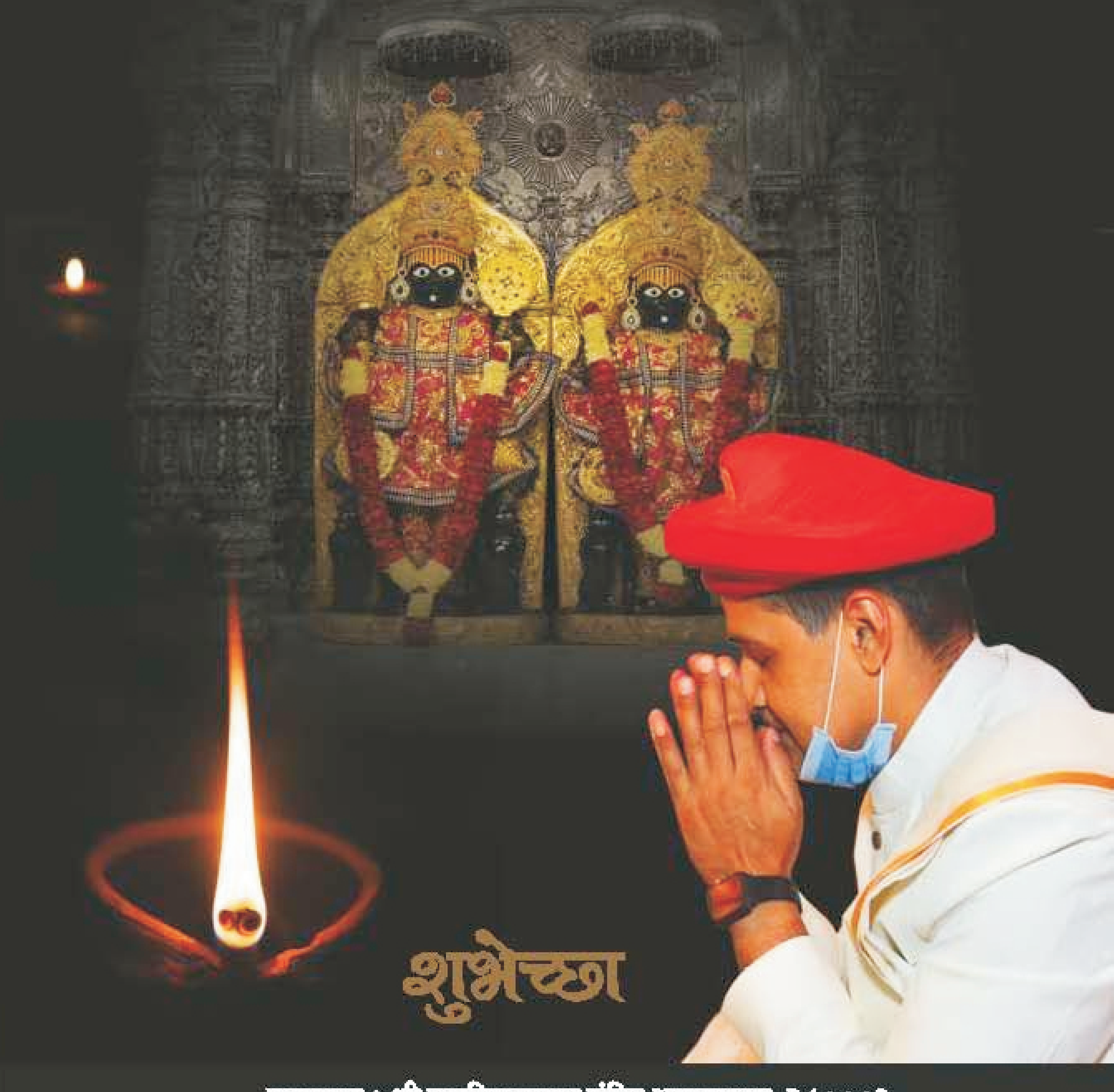

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

कालुपुर

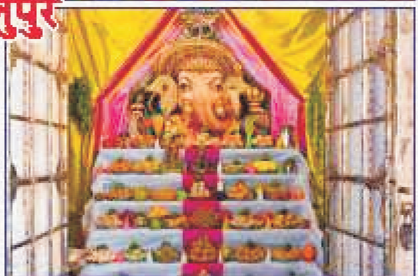

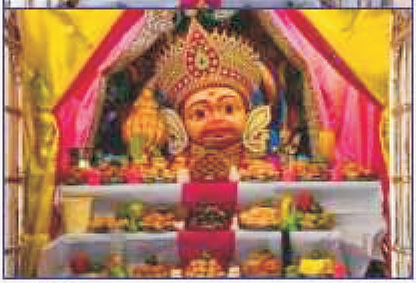

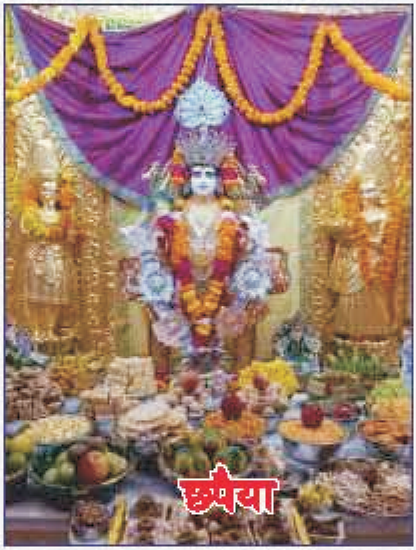

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १४ • अंक : १६१
दिसम्बर-२०२०

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ • फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail: manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष १०-०० • प्रति कापी १-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	जीव के अभयदाता श्रीहरि	०६
०४.	गंडकी नदी	०८
०५.	आचार्य देवो भव:	१०
०६.	गरीब भक्त को कष्ट देने का फल	१२
०७.	क्या भगवान को भी सौगंधरवाना पडा ?	१५
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१७
०९.	सत्संग बालवाटिका	१९
१०.	भक्ति सुधा	२१
११.	सत्संग समाचार	२५

अस्मदीयम्

सच्चे भगवान के भक्त का निरीक्षण या परीक्षा तब होती है ।जब अधिक बडा संकट आ जाये फिर भी भक्त अपने धर्म में से जराभी भटकता नही है । वर्तमान समय में अभी तक के इतिहास में आया हो ऐसा सुने और देना नही है । सम्पूर्ण विश्व में यह भयानक महामारी मानव समाज को संकट में जकड लिया है । हम सब सभी श्रीहरि के परम भक्त के रुप में अपने धैर्य और श्रद्धा को संय में रखकर सूचना और नियमो का पालन जानकार व्यक्तियो द्वारा कही गयी है । उन बातो का पालन करे तो कोरोना जैसे भयानक विपरीत समय में बच सकते है । इस समय में परमात्मा के उपर विश्वास रखे । प्रभु अधिक दयालु है . अवश्य सहायता करेगे । सभी मनुष्यो की रक्षा के लिये परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणो में ता. १६-१२-२०२० से १४-०१-२०२१ तक धर्नुमास के दिव्य प्रातःकाल में षडक्षरी महामंत्र के आर्तनाद पुकार के साथ नियमित आनलाईन धुन में जुडकर प्रार्थना करे । आलस्य निद्रा का त्यागकर प्रातः जग कर प्रार्थना करे । इसी बल के द्वारा सभी जगह सुख शांति का प्रसार होगा । इसी तरह का दृढ विश्वास सबके हृदय में रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(अक्टूबर-२०२०)

२५ ४८ वें प्रागट्योत्सव के अवसर पर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सभा में पू. महंत स्वामी आदि धामो धाम के संतोने साधारणरुप में पुष्पहार पहनाकर शुभेच्छा भेजे थे ।

(नवम्बर-२०२०)

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में समूह चोपडा पूजन अपने कर कमलो द्वारा परम्परागत रुप से सम्पन्न हुआ । उसके बाद कालीचौदश के अवसर पर श्री हनुमानजी का पूजन, अर्चन और अन्नकूट आरती अपने कर कमलो द्वारा पूर्ण किये ।

१५ दिवाली के अवसर पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवो को छप्पन भोग अन्नकूट आरती करने के लिये आये थे ।

१६ नूतन वर्ष का श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सभा में और बैठक में सभी संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०२०)

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रसादी चौक में शरदोत्सव अवसर पर श्री नरनारायण ओच्छव मंडल द्वारा आयोजित ओच्छव में विराजमान ठाकुरजी की आरती अपने कर कमलो द्वारा किये थे ।

(नवम्बर-२०२०)

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रसादी के सभा मंडप में परम्परागत रुप से समूह चोपडा पूजन अपने कर कमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किये थे ।

१५ दिवाली के शुभ अवसर पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को छप्पन भोग आरती अपने करकमलो से पूर्ण किये थे ।

१६ नूतन वर्ष कालुपुर मंदिर में संत-हरिभक्तोने नये वर्ष के अवसर पर दर्शन आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

जीव के अभयदाता श्रीहरि

– महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (कालुपुर, अमदावाद)

॥ अष्टपदीयम् ॥

देवाभयदं नारायण देवाभयदं नारायण ।
रमणीयमे रुपं वरमतिदर्शय ।।देवाभय...।। (ध्रुवपदम्)
परिहृतकोटिककामायसुषमम् । तरुणवयः संवरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।१।।
सहजानंदनाम वृषकन्दं । करुणावरुणगृहरमणीयमे ।।देवाभयदं... ।।२।।
हंसद्युतिवसनानियदर्च्यं । दधतिशिशितिशंकरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।३।।
वामंवामश्रवणेनीलबिन्दुं । केनोदधद्देवधरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।४।।
मुमुदिमहे प्रत्यहंमंजुहारी । वीक्षमनसि देवश्रवणीयमे ।।देवाभयदं... ।।५।।
सममेतुमब्जंमृगायतद्दग्भ्यां । वने वातपस्यन्तिमरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।६।।
द्दष्टवामनोतित्वरतिहृद्यं । यन्मेऽनिशंपापंहरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।७।।
वासुदेवोसौनामेतितन्मेचक्रे । भवतुभवभरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।८।।

॥ इति वासुदेवानंदवर्णी विरचिताष्टपदी ॥

भगवान के भक्तो को अपने हृदय में इस प्रकार का भाव रखना चाहिए के ईष्टदेव के दर्शन मात्र से सभी प्रकार के भय से निर्भय हो जाये । श्री वासुदेवानंद वर्णी श्रीहरि के चरणो में इस कारण से प्रार्थना करते है कि हे प्रभु आप का दिव्य दर्शन कैसा है । जो जीव मात्र को जन्म-मृत्यु के भय से दूर करके मोक्ष रुपी परम गति को प्रदान करता है । इस तरह का भाव व्यक्त करने के लिये । इस स्तुति अष्टक को रचना की गई है । उन शब्दो के अर्थ पर विचार करे ।

देवाभयदं नारायण देवाभयदं नारायण ।
रमणीयमे रुपं वरमतिदर्शय ।।देवाभय...।। (ध्रुवपदम्)

हे परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप मे अविनाशी अक्षरधाम में विराजमान है । आप यहाँ पर मानव शरीर धारण करके जीवो को मायामय पंचभौतिक नाशवान शरीर से छुडाकर दिव्य भागवत शरीर देकर अभय वरदान देते है । हे प्रभु आप अपने रमणीय मनमोहक स्वरुप का हमे दर्शन दे । जिस कारण से मैं निर्भय होकर आप का सहारा लेकर अपने आत्मा का कल्याण कर सकूँ ।

परिहृतकोटिककामायसुषमम् ।
तरुणवयः संवरणीयमे ।।देवाभयदं... ।।१।।

हे श्रीहरि आप की दिव्य मूर्ति का रुप ऐसा है कि करोडो काम देवो का गर्व तुरंत समाप्त कर देता है । उसके अहंकार का क्षणभर में नाश हो जाता है । कारण आप के रुप के समान दूसरा कोई रुपवान और गुणवान है ही नही । आप की यह मूर्ति सदैव किशोरावस्था तथा एव तरुणावस्था का बना रहता है । उसे आप संभाल कर रखे है । हे प्रभु आप का रमणीय मनमोहक स्वरुप नाम का दर्शन दे । जिससे में निर्भय होकर आप का सहारा लेकर अपने आत्मा का कल्याण कर सकूँ ।(१)

सहजानंदनाम वृषकन्दं ।
करुणावरुणगृहरमणीयमे ।।देवाभयदं... ।।२।।

आप के दिव्य नाम का प्रताप ऐसा है । जो शास्त्रो में कहा गया है कि 'कलौ हरिकीर्तनात' इस वाक्य का साक्षात् दर्शन होता है । सरलता से संसार के सभी जीवो

को अति आनंद देने वाले है। इस युग में सहजानंद नाम से प्रसिद्ध है। धर्म के अवतार ऐसे धर्मदेव के पुत्र में प्रगट होकर भागवत धर्म की रक्षा हेतु पृथ्वी के उपर विचरण कर रहे है। आप अति करुणा के सागर अति दीन जीवो के घर तक जाकर अपने स्वरुप का ज्ञान कराते है। हे प्रभु ऐसे मनमोहक स्वरुप का दर्शन दे। जिससे में निर्भय होकर आप के आश्रय से अपने आत्मा का कल्याण कर सकूँ।(२)

हंसद्युतिवसनानियदर्च्यं।
दधतिशिशितिशंकरणीयमे ॥देवाभयदं... ॥३॥

मानसरोवर में कलरव करने वाले हंस के समान अति श्वेत और स्वच्छ तेजोमय वस्त्रो को धारण किये।आप की मूर्ति हजारो भक्तो द्वारा भक्ति भाव से सदैव पूजा-अर्चना करते है। उनके हृदय को चिर कालतक शांति देते है। कल्याण करते है। मोक्ष प्रदान करके अपने दिव्य अक्षरधाम में स्थान देते है। हे प्रभु ऐसे मनमोहक स्वरुप का दर्शन दे। जिससे में निर्भय होकर आप का आश्रय पाकर अपने आत्मा का कल्याण कर सकूँ। (३)

वामंवामश्रवणेनीलबिन्दुं।
केनोदधद्देवधरणीयमे ॥देवाभयदं... ॥४॥

संसार के सभी कमजोर जीवो का उद्धार करना आप के लिये सरल है। यह आप के बाये हाथ का खेल है. ऐसे अलौकिक शक्तिवाले मानव शरीर के बाये कान के अंदर श्याम बिंदु काला तिल का स्मरण या दर्शन करने से अपने मय, या भय की चिंता नही रहती है। आप शेषनारायण की तरह पृथ्वी को अपने सिर पर धारण किये है। उसी प्रकार आप भक्तो को सुरक्षित रखते है। अर्थात अक्षरधाम में रखते है। हे प्रभु ऐसे मनमोहक स्वरुप का दर्शन दे। जिससे में निर्भय होकर आप का आश्रय पाकर अपने आत्मा का कल्याण कर सकूँ। (४)

मुमुदिमहे प्रत्यहंमंजुहारी।
वीक्षमनसि देवश्रवणीयमे ॥देवाभयदं... ॥५॥

आप का आश्रय प्राप्त करने वाले एकान्तिक भक्त दिव्य अक्षरधाम में नित्य प्रति स्थायी अनेक प्रकार के मनपसंद आनंद का अनुभव करते है। उन्हे समाधिमे आप की कृपा से योगी सिद्ध पुरुष को प्रत्यक्ष देख सकते है। और शस्त्रो में श्री भागवतआदि पुराण, वेद, उपनिषद और सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण ऐसा सुनने में आता है। हे प्रभु ऐसे रमणीय स्वरुप का दर्शन दे। जिससे में निर्भय होकर आप का सहारा प्राप्त करके आत्मा का कल्याण कर सकूँ।(५)

सममेतुमब्जंमृगायतदृग्भ्यां।
वने वातपस्यन्तिमरणीयमे ॥देवाभयदं... ॥६॥

हे श्रीहरि आप की कृपा या उपासना, भक्ति के अलावा संसार के भवसागर को करना उसी तरह है जैसे विकट जंगल में कोई मृग हो और वह शेर की दृष्टि में आ गया हो, उसका बचना असंभव है। उसी प्रकार भक्ति विना तपस्वी बन में तपस्या करते है। उन्हे भी हमेशा मृत्यु का भय बना रहता है। आपकी शरणागत निर्भय कर देती है। हे प्रभु अपने रमणीय स्वरुप का दर्शन दे। जिससे में निर्भय होकर आप का सहारा लेकर आत्मा का कल्याण कर सकूँ।(६)

दृष्टवामनोतित्वरतिहृद्यं।
यन्मेऽनिशंपापंहरणीयमे ॥देवाभयदं... ॥७॥

हे श्रीहरि आप की करुणामयी दृष्टि जीव के पूर्व जन्म के लिये गये असंख्य पाप नष्ट हो जाते है। उसका हृदय दिव्यताकी अनुभूति करता है। ये आनंद आप की कृपा से ही मिलता है। हे प्रभु आप अपने रमणीय मनमोहक स्वरुप का दर्शन दो। जिससे में निर्भय होकर आप की शरण में आकर आत्म कल्याण कर सकूँ। (७)

वासुदेवोसौनामेतितन्मेचक्रे
। भवतुभवभरणीयमे ॥देवाभयदं... ॥८॥

हे श्रीहरि में आप का दास वासुदेवानंद वर्णी संसार के जीवो को सावधान करके कहता हूँ कि आप सभी भगवान श्री स्वामिनारायण नाम का जप करेगे तो आप के सभी दुःख नष्ट हो जायेगे और मोक्ष की प्राप्ति होगी। संसार में आप का भरण-पोषण परमात्मा करेगे। हे प्रभु आप का रमणीय मनमोहक स्वरुप का दर्शन हो। जिससे निर्भय होकर आप का सहारा प्राप्त करके आत्म कल्याण कर सकूँ।(८)

गंडकी नदी

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान ने नीलकंठवर्णी स्वरुप में वन विचरण के समय नेपाल के मुस्तांग जिले में मुक्तिनाथ मंदिर में चार महीने तक खडे रहकर कठिन तपस्या गंडक नदी में स्नान करते थे । साक्षत् विष्णु भगवान स्वरुप विराजमान भगवान श्री शालीग्राम रुप में नदी के गोद में प्रवाह में मिलत् है । सम्पूर्ण वैष्णव परम्परा में पूजनीय अनादि काल से शालिग्रामजी पूजा में रखे जाते है। इस रुप की प्राप्ति मात्र गंडक नदी की धारा में ही मिलता है । गंडक और शालिग्राम के संयोग के विष यमें पुराण में एक कथा लिखी गई है।

पुराने समय में किसी एक गाँव में चातुर्मास के विषय में सत्संग करने के लिये एक हुए थे । पूरा गाँव धार्मिक और सत्संगप्रिय था । संत का वचन सुनने के लिये प्रतिदिन ग्रामीण आते थे । सत्संग की पूर्णाहुति के दिन श्रद्धालु ग्रामीणो से खुश होकर संत ने सभी के कल्याण होने का आशीर्वाद दिये । उसी समय उस गाँव की एक स्त्री गंडकी संत से कही कि क्या मेरा भी कल्याण होगा ? मैने भी सत्संग का श्रवण किया है । त्रिकालदर्शी संत बोले कि तुम पापकर्म वैश्यावृत्तिका त्याग करोगी तो तुम्हारा भी कल्याण होगा । तो वह स्त्री बोली यही तो मेरी आजिविका है । मै इसे नही छोड सकती हूँ । मैने तो आप के सत्संग में भाग लिया है । क्या शास्त्र या संत बचन मिथ्या है । मैं मोक्ष से वंचित रह जाऊगी । मेरा पाप सत्संग से बलवान है क्या ? संत समय और संयोग को समझ गये । और औरत को उत्तर दिये । हे स्त्री आप अपनी वृत्ति छोड नही सकती है तो अब से संध्या के बाद जो भी पुरुष आये उसे पति परमेश्वर तुल्य मानकर सेवा करना । और अन्य पुरुषो को पुरुष मानना ।

संत की बात को सत्य मानकर एक मात्र दिन के अंत में संध्या के बाद जो पुरुष स्त्री के घर आता था । उसे पति मानकर सेवा करने लगी । उसे अच्छा भोजन खिलाती थी । आदर से अच्छे वचन बोलती थी । चरण को धोती थी । विविधप्रकार की सेवा करती थी । कुछ दिन के बाद स्त्री के दिमाग से काम वासना समाप्त हो गयी । और पवित्र मन से पुरुष की सेवा करने लगी । उसके सत्य भाव से पुरुष भी काम से विरक्त हो जाते थे

। यह लम्बे समय तक चलता रहा । संत के प्रभाव से गंडकी का जीवन पवित्र बन गया ।

प्रत्येक साधना में साधक की परीक्षा होती रही है । उसमें एक बार भगवान श्री नारायण गंडकी के घर दरवाजे पर अन्य पुरुष बन कर उसके घर में प्रवेश किये । गंडकी अपने नियमानुसार आये हुए पति के पैरो का प्रक्षालन किया । बाट के उपर बैढाई तथा उन्हे स्वादिष्ट भोजन खिलायी । अच्छे फूल का हार पहनाया तथा सुगंधित द्रव्य का शरीर के उपर छिडकाव भी की थी । अर्धरात्रि के समय अन्य पुरुष के रुप नारायण अचानक उठकर बिस्तर पर बैठ गये । अपने हाथ सिर पर रखकर बोले सिर दर्द कर रहा है । ''कुछ दवा दो'' गंडकी ने घरेलु उपचार किया लेकिन कुछ लाभ नही हुआ । इस प्रकार प्रातःतक साक्षात परमब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्री नारायणने मृत्यु का नाटक करके मरा साबित कर दिये ।

अचानक धर्म संकट आ जाने के कारण वह अपना धर्म समझकर वह स्त्री दूसरे दिन उस पुरुष की अन्तिम क्रिया की तैयारी कर दी । गाँव के लोग एकत्र होकर अनामी व्यक्ति की लाश को नदी के किनारे ले गये । उस काल से सतीप्रथा का प्रचलन था । इस प्रथा को देखते हुए । गंडकी पति का सिर अपने गोद में लेकर चिता में बैठ गई । ढोल-नगारा की आवाज के मध्य गंडकी ने प्रतिज्ञा किया कि मेरे यदि सच्चे मन से इस पर पुरुष की पति के समान सेवा की है तो अग्निदेव प्रगट हो । गंडकी की सच्ची प्रार्थना से चिता में अग्निप्रगट हो गयी ।

उस चिता में सोये पर पुरुष स्वयं परमपुरुष भगवान ने नेत्र खोल दिये । अग्निदेव तुरंत शांत हो गये । सोये-सोये श्रीहरि बोले 'हे गंडकी मुझसे बरदान माँग मैं तुम्हारी निष्ठा से अति प्रसन्न हूँ । जो चाहे वैसा वरदान तुझे प्रदान करु ।

पवित्र गंडकी समझ गई । यह तो हमारे प्रभु की लीला है । यह समझकर वह मात्र यह बोली कि आप मेरे गोद में मस्तक रखे है । तो स्थायी रुप से मेरे गोद में रहे । और कुछ मुझे नही चाहिए ।

तत्काल श्रीहरि के प्रभाव से गंडकी नदी के प्रवाह में बहने लगी । और श्रीहरि शालिग्राम के रुप में नदी मे बिराजमान हो गये ।

गंडक के प्रवाह मे शुरु से अंत तक भगवान शालिग्राम विराजित है । गंडकी का रंग काला और शालिग्राम का भी रंग काला है ।

शालिग्राम स्वरुप का आहावन-विसर्जन और प्रतिष्ठा भी नही की जाती है । केवल गंडकी के प्रवाह में साक्षात् श्रीहरि है । उनकी सेवा पूजा होने लगी । वैदिक परम्परा मे आराध्य देव के प्रतीक शालिग्राम की पूजा करते है । और वैष्णवो के अति प्रिय हो गये ।

अपने सम्प्रदाय में धर्मदेव परम्परा में शालिग्राम की पूजा होती है । श्रीहरि नीलकंठवर्णी के रुप में वनविचरण करने निकले तब धर्मदेव को दिये शालिग्राम स्वरुप के साथ प्रतिदिन पूजा करते है । उनकी पूजा विना श्रीजी महाराज जलपान भी नही करते है ।

वनविचरण के समय अनेक घटना हुई है । यह सत्संग मे लिखा गया है । श्रीहरि की पूजा की प्रसादी शालीग्राम इस समय अयोध्याप्रसादजी महाराज अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी वंश परम्परा के वर्तमान गादीपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री स्वयं पूजा करते है । बाहर जाते समय भी शालीग्राम की साथ रख कर पूजा करते है ।

देश विभाग के समय नरनारायणदेव देश में संख्या और सम्पत्ति सामान्य होने से थोडा नाराज अयोध्याप्रसाजीने श्रीहरिने पूजा करके बोला ''मैं आप के साथू हूँ'' महाराजने नंद संतो ने पूजा शालीग्राम स्वरुप मे किये थे ।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित और प्रवर्तित स्वामिनारायण संप्रदाय आज विश्व भर शुद्ध और सात्विक धर्म के रुप में आदरपूर्ण स्थान रखता है। इसकी जड में दो मुख्य बात है। एक दो शुद्ध आचरण तथा अहिंसा परमधर्म का पालन और दूसरा जन सेवा ही प्रभुसेवा का परम कल्याणकारी सिद्धान्त है।

सर्वावतारी श्रीहरिने सभी जीवो का इस लोक और दूसरे लोक में परम हित हो। इस तरह की शिक्षापत्री लिखाकर सबको उसका पालन का ज्ञान दिये है। उसमें श्लोक-१२ मे बताते है। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। इसलिये छोटे-बड़े जीव पर हिंसा नही करना चाहिए. श्रीहरि के स्वभाव का वर्णन करते हुए परमानंद स्वामी नित्य चे,ठा के पद ६ में लिखते है।

अति दयालु रे स्वभाव छे स्वामीनो,
परदुखहारी रे वारी बहुनामीनो
कोईने दुखियो रे देखी न खमाये,
दया आणी रे अति आकला थाये
अन्नधन वस्त्र रे आपी ने दुख टाले
करुणादृष्टि रे देखी वान ज वाले।

सम्प्रदाय प्रमुख ग्रंथ वचनामृत के परथारा में अग्रणीनंद संत लिखते है। ''कभी किसी प्राणी को दुखी देखकर या सुनकर राम-राम कहने का स्वभाव होता है। मानव दान देकर उपकार करता है। ऐसे अतिदयावान इस पृथ्वी के उपर धर्म स्थापना करके उसे धर्मधुरंधर धर्मवंशी आचार्यो को सोंपा तथा सभी संत-हरिभक्तो अपने आचार्य के अर्न्तगत रहकर व्यवहार करना चाहिए। यह सम्प्रदाय मात्र धर्म का वाडा नही है। जन सेवा ही प्रभु सेवा है। इस सिद्धान्त का पालन करने वाला है।

आज के युग में ''पर्यावरण बचाये'' जैसा विचार तो श्रीहरिने लगभग २२५ वर्ष पहले ही लिख दिये थे। अपने आश्रितो को समझाते हुए। प्रत्येक व्यक्ति एक पीपल, एक नी,म एक बरगद, दस आँवला, तीन कोठियाँ, तीन बेल, तीन इमली, नव आम के वृक्ष लगाने चाहिए। उन्हे नरक नही मिलता है। स.जी.प्र.प., अ-१२, श्लोक-४०, आज की तरह फोटो खिचवाने जैसा कार्यक्रम नही है। उसकी देख भाल भी करना लिखा गया है। पशुओ के लिये घासचारा संग्रह शिक्षापत्री श्लोक १४१ में यदि पशु न रख सके तो पशु नही रखना चाहिए। शिक्षापत्री १४२ वे श्लोक में सभी जीवो के प्रति करुणाभाव का वर्णन किया गया है। श्रीहरि श्रमदान करके जलाशय बनवाये थे। वडताल में गोमती, छपैया में नारायण सरोवर, मूली में अलकवाव, मांगरोल में बाव, जेतलपुरमें देव सरोवर इत्यादि कई धार्मिक स्थानो की रक्षा तथा श्लोक नं.३२ में नदी-तालाब में मूल-मल त्याग करना वर्जित लिखा गया है। कच्छ में विचरण करते समय भक्त लालजी सुतार के लिये नमकीन पानी को पीने योग्य कर दिये थे। ये तो स्वयं पुरुषोत्तम नारायण है। वह कुछ भी करने में समर्थ है। लेकिन कल्याण के लिये लोग जुडे उनका विचार था। स.गी. प्र.प., अ.-१४ श्लोक-६० और ६१ से मालूम पडता है कि किसी पुरुष को कभी कन्या विक्रय नही करना चाहिए। यह कृत्य करने वाला कठिन नर्क भोगता है। उस धन का भोग करने वाला परिवार कुल सहित नरक में जाते है। श्रीहरि की इन बातो पर यदि लोग ध्यान दे तो आज भी जन समाज में सभी प्रश्नो का उत्रत मिल जायेगा।

भगवान श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का सर्व प्रथम अहमदाबाद में मंदिर बनवाये थे। और उसमें १८७८ (ई.स. १८२२) फाल्गुन सुद-३ के दिन श्री

नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा करके उसमें अपना सम्पूर्ण ऐश्वर्य रख दिये । और कहे ''यह श्री नरनारायण और अपना रुप समझकर सर्व प्रथम इस शहर में बनवाये है। इस कारण श्री नरनारायण और हमारे बारे में भेद मत करना ।(वचनामृत अम.-६) और देव के सामने गद्दी र बैठकर आशीर्वाद देते हुए बोले, जो लोग इस देव का प्रतिदिन दर्शन करेगे । उसके सभी मनोरथ हम पूर्ण करेगे । विशेषकर पूनम के दिन अवश्य करें । श्रीहरिने इस प्रकार महाप्रतापी देव की स्थापना करके अहमदाबाद में काँकरिया के पास चारो तरफ ब्राह्मणो को दान दिये थे। उनके प्रिय भोजन खिलाकर तृप्त किये थे । भ.चि.प्र. ८६ में निष्कुलानंद स्वामी लिखते है।

कर्या उतारा काँकरिये, देश देशना दास आवीया।
रथ वेल्यने पालखी, उँट घोडा गाडलां लाविया ॥५१॥

इतिहास के आधार पर गुजरात के राजा सिद्धराजजयसिंह इस तालाब को अत्याधिक धन खर्च करने बनवाये थे । यह तालाब श्रीहरि के चरणारविंद से पवित्र महाप्रसादी के समान है । श्रीहरि उच्च आसन पर बैठते थे । यहाँ पर आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने हनुमानजी महाराज की प्रतिष्ठा किये । वर्तमान समय में वहाँ पर हनुमानजी का वृद्ध शिखर युक्त मंदिर स्थित है । प्रत्येक लाभ पंचमी के दिन हरिभक्त वहाँ समैया करते है । कालान्तर में यह तालाब क्षतिग्रस्त होने लगा है।

यद्यदाचरति श्रेष्ट स्तत्तदेवेतरो जन:।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्त्तदनुवर्तते ॥

श्रेष्ठ पुरुष लोग जो - जो कृत्य करते है । उसे ही अन्य लोग व्यवहार में लाते है । सफल प्रमाण के कारण प्रत्येक व्यक्ति उनका अनुकरण करते है । गीता अ.-३ श्लोक २१ ।

इस आधार पर श्रीहरि के प्रसादी का स्थल आदि आचार्यश्री द्वारा स्थापित हनुमानजी का महात्मजानकर, आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्रीन ई.स. १८७४ में अंग्रेजी सरकार के समय लगभग ३०,०००/- पाउन्ड खर्च करके तालाब की मरामत तथा सुधीर करवाये थे । यह कार्य लोक कल्याण हेतु था । देखने वाली बात यह है कि यहाँ पर स्वामित्व का भाव नही था । केवल समाज उत्थान की भावना निहित थी । उन्होने यह भगीरथ कार्य स्वीकार करने के प्रस्ताव को लाये थे । धर्म रक्षक होने के कारण सरकारश्री को प्रस्ताव भेजे थे कि इस तालाब में मछली का शिकार करना पूर्ण प्रतिबन्धित हो । तथा कटोरता से नियम का पालन हो । तो यह सम्प्रदाय बडी कीमत समाज के हित में देने के लिये तैयार है । सम्प्रदाय के आचार्यश्री के उदारता पर अंग्रेजोने ध्यान दिया । उस समय टाईम्स आफ इंडिया जैसे प्रतिष्ठित अखबार तथा प्रादेशिक भाषा में आया था । इतना ही नही टाईम्स आफ इंडियाने सौ वर्ष के बाद भी अपने ऐतिहासिक कोलम **'Before Hundred Years'** में पुन:प्रकाशीत किया था।

सम्पर्दाय के आचार्य का यही मानना था कि इस जगह पर हिंसा नही होना चाहिए । वहाँ पर मछली का आज भी शिकार नही किया जाता है । बल्कि वहाँ पर असंख्य जीवो के लिये प्राणी संग्रहालय बना हुआ है । बडे लोगो का संकल्प कभी न कभी अवश्य फलीभूत होता है । यही सम्प्रदाय की विशेष विशेषता है।

श्री नरनारायणदेव की गद्दी के पूर्वाचार्यो और वर्तमान पीठाधिपति हंमेशा से उच्च भावना वाले रहे है। धर्म की रक्षा में धन को दे देना चाहिए । सम्प्रदाय धनप्रधान नही धर्मप्रधान है । आदी आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने अकाल के समय अपने आश्रितो को पत्र लिखकर अन्न-धन की सदावता हेतु आंमत्रण दिये थे । यह पत्र आज भी उसी स्वरुप में अहमदाबाद नारणपुरा श्री स्वामिनारायण म्युजियम में रखा हुआ है . और जनदर्शन के लिये रखा गया है । आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री गुजरात की जीवन रेका के समान नर्मदा योजना में सरकरा को उदार दिल से सहायता दिये थे । इतना ही नही नर्मदा बाँधके उपर जाकर देव की पूजा स्वयं किये थे । आज यह योजना पूर्ण हो गई है । भुज का भूकम्प हो, बाढ हो, अकाल हो, महामारी हो या कोरोना हो, प्रत्येक संघर्ष में सामाजिक तथा आर्थिक सहायता दिये है । यह समप्रदाय हमेशा सर्वजीवहित की भावना रखता है।

गरीब भक्त को कष्ट देने का फल

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

हम सभी के आराध्यदेव सर्वावतारी श्रीहरिने सभी जीवो के कल्याण हो इस उद्देश्य से अपने को जीवन जीने की एक कला बताये है कि अहिंसा सदैव धर्म का भाग होना चाहिए । किसी प्राणी से द्रोह नही करना चाहिए । गरीब हो साथ ही साथ भगवान का भक्त हो उसे कष्ट देने से क्या परिणाम मिलता है । वह वडोदरा के श्रीहरि के एकान्तिक भक्त नाथ भक्त के अवसर से देखते है ।

गरीब अर्थात कुछ लोग आर्थिक रुप से होते है । कुछ मन के स्वभाव से होते है । किसी के सामने ऊँचे स्वर में बोलना भी नही है । सहनकर लेता है । नाथ भक्त दोनो तरह के भक्त थे । लेकिन श्रीहरि के परम भक्त थे । महामुक्त भी थे । श्रीहरि की कृपा से उसेक जीवन में काम, क्रोध, मद, द्वेष आदि अन्तःशत्रुओ का नाश हो गाय था । श्रीहरि उन्हें कई चमत्कार दिये थे । अग्नीकावली काल में श्रीहरिने नथ भक्त की चार कोठारे अन्न से भर दिये थे । उससे हजारो मानव जीवित रहे थे । स्वयं वह संतोषी व्यक्ति थे । गाय को मारने वाले कसाई भी सीधे हो गये थे । उनके सम्पर्क में आने वाले कैदी भी सत्संग करने लगते थे । स.गु. गोपालानंद स्वामी के सत्संग से वह उच्च कोटि के भक्त हो गये थे ।

नाथ भक्त की स्थिति सुदामा की तरह ही थी । लेकिन कभी किसी के सामने हाथ नही फैलाते थे । एक बार उनके बच्चे भूखे रहने लगे । उसी समय अपने पत्नी के कहने पर दूधदेने वाली अपनी भैंस बेचने के लिये तैयार हो ये । यह बात वडोदरा शहर में फैल गई । तभी दो-चार व्यक्तियो के द्वारा गायकवाड राजा के कार्यकारी नारुपंत नाना साहब यह बात सुनकर भेजे थे । आदमियो से बोले नाथ भक्त से कहना भैंस पंतजी को चाहिए । जो मूल्य होगा वह दे देगे । चौकीदार आकर नाथ भक्त के पास आकर यह बात कह दिये । भक्त खुश हो गये । श्रीहरि का उपकार माना कि आप जैसा व्यक्ति मेरी भैंस खरीदकर उचित मूल्य देगे । दिवान साहब सत्संगी है । मुझे उनसे बार-बार पैसा भी नही माँगना पडेगा । इस प्रकार सोचकर नाथ भक्तने अपनी भैंस खूँटे से छोडकर दे दिये । शाम तक पैसा नही आया । शायद कार्यक्रम में व्यस्त होने के कारण पैसा भेजना भूल गये हो । एक दिन, दो दिन इस प्रकार दस दिन का समय बीत गया । नाथ भक्त तथा उनकी पत्नी भ्रम में आ गये । बच्चो का दूधपीना बंद हो गाय । तथा घर में वाजरा भी आना बंद हो गया । नाथ भक्तने विचार किया कि अब पंत साहब को याद कराना चाहिए । साहब मंदिर दर्शन करने प्रतिदिन आते है । मंदिर में ही याद कराना यह सोचकर मंदिर पर खडे रहे थे । आँख में आँसु आ रहे है कि मुझे दो व्यक्तियों की हाजिरी मे बडे व्यक्ति से पैसा माँगना पडेगा । साहब अकेले तो कभी मिलते ही नही है । उसी समय नारुपंत घोडागाडी में से उतरे । अंगरक्षक और चौकीदार साथ में ही थे । नाथ भक्त हाथ जोडकर जय ''श्री स्वामिनारायण'' कहकर बोले मेरे बच्चे दस दिन से भूखे है । आप काम-काज में भूल गये होगे । कृपा मेरी भैस की कीमत देने की कृपा करे । मेरे बच्चे कुछ खा सके । बोलते-बोलते भक्त की

आँख से आँसु निकल पडे । क्योकि वह माँगना नही चाहते थे । लेकिन माँगना आवश्यक हो गया था ।

आदमी के मध्य भक्तने पैसा माँगा यह बात साहब को खराब लग गई । सत्संगी होते हुए भी भगवान के भक्त की महिमा नही समझ सके । नाथ भक्त से माँफी माँग कर धन देना चाहिए था । लेकिन सत्ता के मद में अचानक जोर से बोले । ''ऐसे कई भिखारी है ।'' तुमको पता है किस के सामने पैसा माँग रहा है । पैर में से जूते निकाल कर भक्त को मारने आये । यह देखकर भक्त का हृदय काँप उठा । श्रीहरि को पुकारा । हे महाराज ! मै मुफ्त का एक पैस भी नही माँग रहा हूँ । मै तो इनको दी गई भैंस की कीमत माँग रहा हूँ । इसके सामने मुझे गाली दे रहे है । हे प्रभु ! जैसी आप की कृपा मेरा कोई दुःख आज कम हुआ होगा । यह कहकर भक्तने सिर झूका लिया । सभा मंडप में बैठे संत गोपालानंद स्वामी बोले ''नारुपंत संतोष रखो, मोजडी की चोट से आप का सत्यानाश हो जायेगा । भक्तराज पर चोट सीधे महाराज के उपर प्रहार होगा । भगवान से सहन नही होगा । बाद में दर्शन करके पंतजी चले गये । नाथ भक्त भी घर वापस आये । सिंहासन पर बैठे हुए ठाकुरजी के सामने सिर झूकाकर रोने लगे । पत्नी से बोलने में समर्थ नही थे ।

यहाँ पर हमे अपने प.पू. महाराजश्री द्वारा कहे गये सुवाक्य याद आते है । **Be human first, then religious** ''पहले मानव बने, बाद में धार्मिक'' । यहाँ पर लगता है नारुपंत मानवात का मार्ग भूलकर मंदिर के मार्ग को पकडलिये है । हमे ऐसा लगता है कि मंदिर की सीठी चढने से मानवता का ज्ञान होगा । व्यवहार शुचिता नही होने पर इस तरह की घटना घट जाती है । लोग ली गई वस्तु देना नही चाहते है । माँगने पर दुश्मन की तरह खडे हो जाते है ।

एकान्तिक भक्त के आँसु भगवान नही देख सकते है । भगवान की कृपा से बुद्धि ठीक और खराब हो जाती है । दूसरे दिन बुद्धि बिगडी रानी के साथ मिलकर जहर खिलाने की बात दिमाग में आ गई । राज्य हमारे कब्जे में आ जाये । दोनो ने मिलकर कागज लिखे । सही और सिक्का कर दिये । दिवान वह कागज लेकर सभी कार्य समाप्त करके कागज को जेब में रखकर घर आ गये । कपडे को घोने में रखखर कागज निकालना भूल गये । भगवान का न्याय देखो । गरीब भक्त का धन भूल गये । यहाँ पर षडयंत्र का कागज भूल गये । धोबी कपडा धोने के लिये ले गया । कोट के जेब से कागज मिला । धोबी आरीक्षित था । लेकिन कागज के उपर सही-सिक्का देखा तो समझ गया । यह महत्वपूर्ण कागज है । यह प्रमाणिक कागज राजा को साक्षात देगे तो राजा अति खुश होगे । धोबी राजदरबार में आया । गायकवाड सरकार सयाजीराव (द्वितीय) सभा में बैठे थे । धोबीने प्रणाम करके कागज को राज दरबार में रख दिया । अपने को मारने वाले साजिश पत्र में देखकर गुस्से में बोले चौकीदार से बोले, तत्काल दीवान को बंदी बनाया जाये । मेरे समक्ष लाया जाये । भोजन के

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

प्रथम ग्रास के साथ दिवान को बंदी बनाकर राजा के समक्ष लाया गया । नाथ भक्त के बच्चे भूखे होने के कारण दिवान एक नेवाला भी नही खा सके ।

सयाजीराव बोले : अरे दुष्ट ! तुम्हे तो अभी जहर दे देता लेकिन हमे याद आ रहा है कि श्री स्वामिनारायण महाप्रभु जब महल में आये थे । तब दयालु ने एक आज्ञा दिया था । कि गायकवाड ! नारुपंत आप का दीवान है । यह कभी दंड पाये तो मृत्युदंड मत देना । भगवान के ये शब्द मुझे तुम्हारी रक्षा कर रहे है । लेकिन में आदेश देता हूँ । इन्ही कपडो के साथ राज्य से बाहर निकल जाओ ।

नाथ भक्त को रुलाने से पूरी उम्र उन्हे रोना पडा । हाथ में अन्नपात्र लेकर भीख माँगते है । कोई भीख भी नही देता है । रानी को मृत्यु का दण्ड प्राप्त हुआ । अब वचनामृत में श्रीहरि के शब्द देखे ।

संसार में पंच महापाप करने वाले कभी छुटते भी है । लेकिन भगवान के भक्त के साथ द्रोह करने वाले कभी नही छुटते है । इस भगवान के भक्त की सेवा से पुण्य प्राप्त होता है । भगवान के भक्त से द्रोह करना सबसे बड़ा पाप है ।(ग.म.-६३)

पहले तो भगवान से दूसार भगवान के भक्त से, तीसरा ब्राह्मण को, चौथा गरीब व्यक्ति को कभी परेशान नही करना चाहिए । इन चारो से हमे अधिक डरना चाहिए । चारो से द्रोह रकने पर जीव का नाश हो जाता है । भगवान को न मानना हो यदि वह भगवान का भक्त हो तो भी उसे राक्षस समझना चाहिए । ब्राह्मण गरीब तथा भगवान से द्रोह करने वाला हमे प्रिय नही लगता है । इस संसार तथा उस लोक में भी हमारा साथ नही मिलात है ।(व.-११)

महाभारत में भीष्म पितामह युधीष्ठिर से ऐसा बोले है । यदि तुम गरीब को परेशान करोगे तो सम्पूर्ण वंश का नाश हो जायेगा । इसलिये भगवान का भक्त हो या दूसरा कोई गरीब को लेश मात्र कष्ट नही देना चाहिए । गरीब को दुःख देना ब्रह्महत्या के समान होता है । (ग.प्र.प्र.-७२)

वचनामृत ग.प्र.प्र.-७१ , ग.अन्-१२ और १५ आदि भक्तो की महिमा समझाने के लिये तुलसीदासजीने लिखा है ।

तुलसी गरीब कोन छेडिये, बडी गरीब की हाय ।
मुये पशु के चाम से, सार भस्म होई जाय ॥

कोई भक्त हो , गरीब हो , ब्राह्मण हो , गाय माता हो उनकी सेवा न करे कोई बात नही, लेकिन उनकी कुसेवा न करे । तुलसीदास का जीवन मे प्रभु की महिमा यही थी ।

तुलसी जया के मुरवन से, मूले निक्से राम ।
ताकुं पग की पहेनिया, मेरे तन की चाम ॥

जिसके मुख से भूल से भी राम निकलता है । उसे मेरे शरीर के चर्म से जूते बनाकर पहना देना । सारांश द्रोह से बच सकते है । परहित सहिन नहि भाई, परपीड सम नही अधभाई – संत तुलसीदास

दूसरे का हित करने से अच्छा कोई दूसरा धर्म नही है । दूसरे को दुख देने के समान कोई अधर्म नही है ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेरव, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
magazine@swaminarayan.in

क्या भगवान को भी सौगंधखाना पडा ?

- जयंतिभाई के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

जब कभी भी अपनी सत्य बात को सामने वाला मानने के लिये तैयार नही होता है । तो सामने वाले को विश्वास दिलाने के लिये अपने प्रिय की कसम खाना पडता है । कुछ लोग अपने माता-पिता या पुत्र की सौगंधखा लेते है । सौगंधखाकर अपनी बात की सत्यता प्रमाणित करना चाहते है । यह तो संसार की बात है । लेकिन भगवान को भी सौगंधखाना पडता है ? सभी काम अच्छे से किये हो तो भी यदि महाराज के स्वरुप निष्ठा में कमी हो तो किसी भी अवस्था में अक्षरधाम में प्रवेश नही मिलता है । इस लिये महाराज स्वयं पुरुषोत्तम की बात वचनामृत में सौगंधखाकर कहे है ।

गढडा मध्य-१३ वाँ वचनामृत : जो तेजोमय मूर्ति है । यही प्रत्यक्ष महाराज है । अक्षररुप के मूर्ति के बारे में महाराज देखते है । यह मानेगे तो आप का कल्याण होगा । विशेष बल देकर महाराज कहते है । यह बात प्रतिदिन नया रखना है । भगवान की यदि कोई दूसरी बात करे तो उसमें यह बल अवश्य लाना । यह बात सभी शास्त्र का मूल है कि अनुभव इस तरह बताता है । हमने सामने देखकर यह बात किये है ।

प्रत्यक्ष देखकर नही कहा गया है । हमे परमहंस की सौगंधहै । इस प्रकार महाराज अपने पुरुषोत्तमत्ता की बात सर्व परमहंस की सौगंधखाकर कहते है । इसमें शंका-तर्क-वितर्क का रंच मात्र भी जगह नही है ।

वचनामृत मध्य-३३ : निष्कामी व्रत की दृढता करने के बारे में बात किये है । जिस दिन से हम जन्म लिये है । तब से आज तक जागृत अवस्था में किसी भी दिन स्वप्न या साक्षात स्त्री का साथ नही किया है । मैं परमहंस की सौगंधखाता हूँ । अपने आश्रितो को निष्काम दृढ कराके शुभ उद्देश्य से कसम खाता हूँ ।

वचनामृत अंत्य-२ : सत्संग द्वारा मैं वश मे हो जाता हूँ । मै किसी साधन से प्रभावित नही होता हूं । यदि सत्संगी का साथ मिला है । तो भी मैं समस नही पाउ । तो हम अति मंद बुद्धि वाले है । अपने स्वरुप को समझाते हुए कहते है । जैसी बद्रिकाश्रम में सभा है । वैसी ही गोलोक वैकुंठ में भी है । फिर भी ये सत्संग की सभा (अक्षरधाम) से अधिक है । संत समाज की सौगंधहै ।

नीचे के महामंदिरो में नित्य दर्शन के लीये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपिया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.swaminarayanmandirtorda.com
नारणघाट : www.narayanghat.com
वडनगर : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
प्रयाग : www.prayagmilan.org
अयोध्या : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
ईडर : www.gopinathjiidar.com
नारणपुरा : www.sankalpmurti.org
धोलका : www.swaminarayanmandirdholka.co.in

सौगंधक्यो खाना पड रहा है । सभी को अलौकिकता नही दिखाई देती है । और दिखती भी नही है । इस लिये सौगंधखाना पडता है । जीव को परोक्ष का ज्ञात है । लेकिन (प्रत्यक्ष) हमारे प्रति दृढता नही है । इस लिये सौगंधखाना पड़ता है । प्रत्यक्ष गुरु रुप हरि शरीर छोडकर जो चाहते थे वह काया मिली है । उसे परमपद या मोक्ष कहते है । संत सभा में भी महाराज को सौगंधखाना पडा था । जिसका धाम सर्व परे है । उसका स्वामी सर्वोपरि होता है ।

वचनामृत अंत्य-२१ : यहाँ पर अपने पुरुषोत्तमता को समझाते कहते है । श्वेतद्वीप में, बैकुंठ में, गोलोकधाम में भगवान के पार्षद सभी सत्संगी है और हम तो सर्व से परे दिव्य अक्षरधाम के बारे में भगवान के पार्षद है । यहि वे सत्संगी (स.गु. गोपालानंद स्वामी) नही जाने तो हमे भगवान के भगवान की सौगंधहै । इस प्रकार अपनी सर्वोपरि स्वरुप के प्रति निष्ठा को दृढ करने की कसम खाते है । क्या काम ? अपने स्वरुप की उपासा दृढ करवाने में शंका-कुशंका तर्क-वितर्क नही होना चाहिए । सर्वोपरि की उपासना के अलावा धाम की प्राप्ति सम्भव नही है ? अपने कल्याण में कोई कमी न रह जाये । उसके लिये श्रीजी महाराजने बार-बार कसम खा कर समझाये है । सर्वोपरि बात को विशेष दृढ करने वाला प्रसंग अब हमे चाहिए । सितम्बर-२० अपने स्वामिनारायण मासिक में अपने कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर के पू. महंत स्वामी शास्त्री निर्गुणदासजी के लेख में स.गु. नित्यानंद स्वामी का ''अष्टप्रदीयम'' अष्टक को सरल गुजराती में अनुवाद करके समझाया है जिस में नित्यानंद स्वामी कहते है हमे प्राप्त भगवान के रुप को समझाने तथा उपासना करने परमेश्वर के रुप को समझना सामान्य विचार में आता नही है । अनेक प्रकार की शंका में बडे पंडित, संत, महात्मा सिद्धपुरुष निर्णय नही कर पाते है ।

नित्यानंद स्वामीने यह बात कई वर्ष पूर्व कह दिये थे । जो आज दिखाई देता है । महाराज अपने मुख से अपा बडापन सौगंधखाकर कहे है । फिर भी आज सम्प्रदाय में महाराज जैसे है वैसे पहचाने जाते है । सर्व अवतारो के अवतारी है । इस में शंका तर्क-कुर्तक भी दिखाई देता है । श्रीजी महाराज स्वयं वचनामृत में कहते है । ऐसा शुद्ध सम्प्रदाय तथा सत्पुरुष होने के बाद भी जो न पहचाने वह मंद बुद्धिवाला है । इसलिये महाराजने मध्य में १४ माँ वचनामृत में कहते है जिस भगवान का स्वरुप निश्चय कर लिया है । वे सभी निर्गुण है और धाम की प्राप्ति करेगे । निश्चय न होने पर मायिक माना जायेगा । तथा उसकी अधोगति होगी । मनुष्य तन पाकर यदि मोक्ष की प्रगति न होतो मानव जन्म मिलना बेकार है । इसलिये स्वरुप निस्चित करके मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त कर लेना चाहिए ।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५
• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १८-३० • शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि

अक्टूबर दान भेट

रु। १,००,०००/-	अ.नि. प.भ. नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्लल - अमदावाद तथा अ.नि.प.भ. मणिलाल लक्ष्मीदास भाजा तथा अ.नि.प.भ. नंदलालभी भालचंदभाई कोठारी मंडल के हेतरुचीवाले हरिभक्तो की तरफ से.
रु। ५१,०००/-	अ.नि. नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्लल - अहमदाबाद तथा अ.नि. ईश्वरलाल लाभशंकर पंड्या की दिव्य प्रेरणा से - ह. श्रीमती सयुकताबेन शाह
रु। १०,०००/-	श्री जयेशभाई चंदुभाई पटेल - खेरवा (जतना)
रु। ५,५५५/-	विहान चौहाण (काचा टेलर्स) लेस्टर यु.के. पांच वा जन्म दिवस निमित्त - ह. मुळजीभाई
रु। ५,१२१/-	अ.नि. प.भ. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहेब की ११८ वी वर्ष गांठ निमित्ते
रु। ५,०००/-	वसुबेन सी. व्यास - जेतलपुर
रु। ५,०००/-	श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल - अहमदाबाद

नवम्बर दान भेट

रु। ४,११,०००/-	प.भ. डॉ. नरेन्द्रभाई भावसार परिवार - महेसाणा
रु। १,११,०००/-	प.भ. पटेल जनार्दन मगनभाई पटेल - कलोल
रु। १,००,०००/-	प.भ. पंकजभाई पटेल - वडोदरा
रु। १,००,०००/-	अ.नि. प.भ. नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्लल तथा अ.नि.प.भ. ईश्वरलाल पंड्या के शिष्य मंडल - नडियाद
रु। १,००,०००/-	अ.नि. कमळाबेन गजानंद जादव, अ.नि. गजानंद जादव - ह. राजेशबाई जादव - मणीनगर
रु। १,००,०००/-	श्री मगनभाई दामजीभाई भोरणीया परिवार - ह. ममताबेन भोरणीया - मोरबी
रु। १,००,०००/-	श्री जीतेन्द्रभाई रमणलाल पटेल - अहमदाबाद
रु। ३०,०००/-	श्री हरिसन राजेशभाई शाह - नवरंगपुरा
रु। ३०,०००/-	श्री राजेश विठ्ठलदास शाह - नवरंगपुरा
रु। ३०,०००/-	श्री भगवत विठ्ठलदास शाह - नवरंगपुरा
रु। ३०,०००/-	श्री धर्मिल भगवत शाह - नवरंगपुरा
रु। ३०,०००/-	श्री हरिवदन विठ्ठलदास शाह - नवरंगपुरा
रु। २५,०००/-	श्रीहरि कास्ट इन्डस्ट्रीझ - अहमदाबाद
रु। ५,०००/-	प.भ. लक्ष्मीबेन काळीदास पटेल परिवार - सरसपुर-अहमदाबाद
रु। ५,०००/-	चि. रीचा तथा चि. प्राची, संदिप शेठ - अहमदाबाद

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

श्री यज्ञ पूजन

दि. १४-१०-२०२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) दरबारगढ - मोरबी - ह. सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा।

श्री लक्ष्मीपूजन

दि. १३-११-२०२०	अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट - ह. भास्करभाई तथा राजदीपभाई नारणपुरा - सत्व तथा सर्व।

श्री हनुमान पूजन

दि. १४-११-२०२०	कालीचौदश के अवसर पर प्रसादी के हनुमानजी के समूह पूजन - ह. परेशभाई ठाकरशीभाई पटेल (गामी) - नवा वाडज।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि

दि. ०१-१०-२०२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) हर्षद कोलोनी, बापुनगर, ह. - दासभाई
दि. ०२-१०-२०२०	श्री बलदेवभाई लालदास पटेल (झुलासणवाला), नारणपुरा
दि. ०३-१०-२०२०	मे. काचा टेलर्स - लेस्टर (यु.के.) - ह. श्री मुलजीभाई, श्री रमणीकभाई, श्री चंदुभाई तथा श्री विनुभाई
दि. ०४-१०-२०२०	(१) श्री नर्मदाबेन खीमजीभाई जाकासणीया - मोरबी - ह. रवि तथा हरिकृष्ण तथा देव - प्रेरणा सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा - मोरबी (२) अ.नि. प्रतापभाई जेचंदभाई पाटडीया - मोरबी - ह. अल्पेश तथा धवल तथा भानुबेन - प्रेरणा सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा उषाबा - मोरबी (३) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - लुणावाडा
दि. ०७-१०-२०२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर (एप्रोच) बापुनगर - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - ह. रमेशभाई खीचडीया
दि. १०-१०-२०२०	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - घाटलोडीया - ह. दिनेशभाई
दि. ११-१०-२०२०	सांख्ययोगी कानबाई - गढपुर - प्रेरणा सांख्ययोगी मेघनाबेन, सांख्ययोगी जयश्रीबेन, सांख्ययोगी शोभाबेन - गढपुर - प्रेरणा सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा - मोरबी
दि. १२-१०-२०२०	श्री देवेन्द्रभाई रामदास पटेल (लसुन्द्रावाला) - नारणपुरा
दि. १४-१०-२०२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर - सत्संग समाज, आर.सी. टेकनिकल, घाटलोडीया - ह. रमेशभाई कोठारी
दि. १५-१०-२०२०	(१) गाम केरा के अ.नि. सांख्ययोगी नानबाी करसन वरसाणी की पुण्य स्मृति में गुरु सांख्ययोगी रतनबाई के शिष्य मंडल (२) सांख्ययोगी नानबाई भुडीया - मानकुवा (कच्छ)
दि. १६-१०-२०२०	(१) श्री प्रहलादभाई बेचरदास पटेल (डांगरवावाला) मेमनगर - ह. किरीटबाई तथा प्रविणभाई तथा हसमुखभाई (२) गोमतीबेन रमेशभाई पटेल (डांगरवावाला) - यु.एस.ए. ह. श्री बलदेवभाई लालदास पटेल
दि. १८-१०-२०२०	अ.नि. नाथजीभाई ईच्छाराम शुकल तथा अ.नि. मणिलाल लक्ष्मीदास भालजा तथा अ.नि. नंदलालभाई भालचंदभाई कोठारी मंडल के हेतरुचिवाले हरिभक्तो तरफ से
दि. २५-१०-२०२०	श्री दिलीपभाई शीवलाल ठक्कर - पाटडी

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कथा सुने उसका भविष्य सुधरे

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

सत्य में सत्य, अच्छा दिव्य अमृत कथा ही है। भगवान के चरित्र तथा आज्ञा का ज्ञान मनुष्य को नही होता है। भगवान की कथा में क्या स्वाद होता है। इसमें क्या आनंद है ? एक बार कथा में आने पर थोडा अनुभव ले तो ज्ञान हो।

एक गाँव में पांच संत आये। सत्संग वाले भक्त कम थे। दो ही लोग हरिभक्त थे। यहाँ पर रुके कल हमारी भिक्षा स्वीकार करे। संतो ने तथास्तु कह दिया। भक्तोने सोचा कि संत के थाल में क्या रखा जाय। बगल में चार भैसो का स्वामी रहता था। वह देसाई थे। उसके पास जाकर कुछ दूधमाँगते है। किस लिये इतना दूधले जा रहे है। तो कहे कि हमारे यहाँ संतलोग आये है। लोगो की दूधदेना है। बह बोले आप विना पैसे दिये दूधले जाईये। देसाई भाई धार्मिक वृत्ति वाले थे। संतो को दूधदिये। संतोने दूधगर्म कर दिया। दहीं बनाकर दूसरे दिन भगवान के भोग हेतु श्रीखंड बना दिये। देसाई को लगा कि साधु महात्मा आये हुए है। आज मैने दूधदिया है थोडा सत्संग तो कर ले। साधु की बाते सुनने को मिलेगी। गाँव में मंदिर न होने के कारण हरिभक्त के घर लोग रुके थे। घर में कोने में झोला लटक रहा था। कौतुहल वस उसने पूछा – यह क्या है ? आप के द्वारा दिया गया दूधहै। मेरा दूधबिगड गया होगा। यह आपने क्या किया ? हरिभक्त बोला कृपया प्रतिक्षा करे।

एक संत कथा कर रहे थे। दूसरे संत झोली उतारकर उसमें चीनी डालकर श्रीखंड बना दिये। यह देखकर देसाई का दिमाग खराब हो गया। अरे यह संत कैसा कि हमारे दूधको खराब कर दिया। यह फेट कर दूधका नाश कर दिया। न तो दूधरहा न घी बन पाया था।

थोडी देर के बाद भगवान का वहाँ पर भोग लगाया। ''खाने का थाल तैयार है'' भक्त बोले ये देसाई भाई हमारे बगल में रहते है। भावपूर्वक दूधदिये है। पैसा नही लिये है। संत बोले उन्हे भी प्रसाद देना है। संत ने श्रीखंड का प्रसाद दिये। मै मिलावट वाली वस्तु नही खाता हूँ। हम तसला भर कर दूधपीते है। यह हमे अच्छा नही लगता है। लेकिन यह तो भगवान का प्रसाद है। थोडा तो लो हरि का प्रसाद है। संत का सम्मान रखकर श्रीखंड का स्वाद लिये। यह तो बहुत अच्छा है। इस तरह एक किलो श्रीखंड खा गये। पेट मजबूत होने के कारण सब अच्छा रहा . फिर बोले जब भी आप के स्वामी आये तो दूधअवश्य ले जाना। श्रीखंड का स्वाद हृदय में बस गया।

मित्रो ! जब तक उसने श्रीखंड का स्वाद नहि लिया था। तब तक उसे अच्छा नही लगता था। लेकिन जब स्वाद मिला तो आनंद आ गया।

परमात्मा की कथा ऐसी है। स्वामिनारायण भगवानने अपने लाभ के लिये शिक्षापत्री में आज्ञा किये है। प्रतिदिन सायं मंदिर में जाकर भगवान की कथा वार्ता आदर से सुनना चाहिए। मंदिर न होने पर घर में भी कथा-वार्ता करना आवश्यक है। भाव से कथा सुनने पर आप का भविष्य सुधर जाता है।

•

बडा हरिभक्त कौन ?

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवानने मध्य के ४१ वे वचनामृत में सम्मान के बारे में बात की है । उसके उपर मुक्तानंद स्वामी तुलसीदास की यह साखी कही है –

"कनक तज्यो कामिनी तजयो, तजयो धातु को रंग
तुलसी लघु भोजन करी, जीवे मानके रंग"

मित्रो ! महात्मा तुलसीदासने यह अर्थ पूर्ण साखी का सर्जन एक घटना के बाद की थी । आप को ज्ञात है वह कौन सी घटना है ? क्या कहे ? मालमू नही ? तो आईये बालमित्र आज एक बात कहता हूँ । अधिक ध्यान से पढिये ।

एकबार तुलसी महाराजजी रास्ते पर चल रहे थे । वहाँ पर सिपाही चिल्लाकर रास्ता देने के लिये कह रहा था । ये महात्मा एक तरफ चले जाईये । राजा की सवारी आ रही है । तुलसीदास हटकर सोचने लगे कि इतना काफिला । यह क्या है ? महात्माने विनय पूर्वक सिपाही से पूछा कि हे सिपाही राजा नगरजनो के साथ कहाँ जा रहे है । क्या कोई विशेष कार्यक्रम है । सिपाहीने कहा कि आप तो वेषधारी है फिर भी सिद्ध पुरुष के बारे में पता नही है । आप का वेश धारण करना अच्छा नही है । यह महामुनि तपस्वी सप्ताह में एकबार गुफा से निकलकर दर्शन देते है । एकबार थोडा भोजन करते है । बाकी सप्ताह भर समाधिमें रहते है । गुफा से बाहर आकर आज दर्शन देने वाले है । इस कारण राजाजी और हजारो नागरिक दर्शन के लिये जा रहे है।

तुलसीदास बोले कि हे राजपुरुष आपने सिद्ध पुरुष की बात किये है इस लिये मैं भी दर्शन करना चाहता हूँ । क्या में उनका दर्शन कर सकता हूँ । सिपाहीने कहा हाँ–हाँ अवस्य जाये । आपभी संघ में जुड जाये । महात्मा तुलसीदासजी महाराज सिपाही के साथ चल दिये तथा महात्मा की प्रशंसा सुनते जा रहे थे । सिपाही ने कहाँ ! कुछ दिन के बाद राजा का जन्म दिन है । उस अवसर पर यह महात्मा महल में आने के लिये निमंत्रण प्राप्त कर चुके है । उस दिन राजा उन्हे राजगुरु धोषित कर सकते है । संत का चित्र चित्रकारो द्वारा बनाकर राज्य में बाँटा जायेगा । उनकी पूजा घर–घर में होगी । आप वेशधारी को कही कोई पूछ रहा है । जब यह तपस्वी कम समय में राज्य में ख्याति प्राप्त कर चुके है ।

महात्मा तुलसीजी के मन मे शंका हो गयी थी । सिपाही की बात सुनकर और शंका हो गई । सत्य को जानने के लिये तुलसीदास सभी के साथ आश्रम में चले गये। तुलसीदास संत को देखकर समझ गये । यह केवल मान सम्मान मिलने के कारण हुआ है । यह सम्मान बंद होने पर खबर पडेगी ।

महात्मा तुलसीदास के मन में शंका तो पहले से ही थी । उसके बगल में राजा के दिवान भी बैठे थे । जिन्हे भी महात्मा पर शंका थी । लेकिन कुछ बोल नही पाते थे । उन्हे भी यह बात अच्छी नही लगी की कम भोजन में भी जीवन जिया जा सकता है । तुलसीदास जाते–जाते दिवान से बोल कर गये वह मान के आधार पर जीवीत है । दिवानजी होशियार थे । उन्होने परीक्षण करना शुरु कर दिया ।

राजा और प्रजा प्रत्येक मंगलवार को दर्शन के लिये जाती थी । अबकी अकेले दिवानजी सोमवार के दिन संत से मिलने गये । और तपस्वी से बोले हे महात्मा अब राजा और प्रजा आप का दर्शन नही करना चाहते है । अब तो आप राजगुरु के पद से भी वंचित होने वाले है । क्योकि राज्य में दूसरे संत आ गये है । वह आप से अधिक चमत्कारी है । राजा उन्हे राजगुरु बनाना चाहते है

(पेईज नं. २३)

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) ऐकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सत्संग का लक्ष्य क्या है ? यह सम्पूर्ण वीतरागता"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

'कथा', 'सत्संग' यह सब होता है। उसका मुख्य लक्ष्य क्या है ? अंतर के विषय-वासना (पंचविषय) के बार में (काम, क्रोध), मान, माया, लोभ इत्यादि जो कुछ रह गया हो उसे दूर करने के लिये होता है।

ग.म. के २५ वे वचनामृत मे महाराजने प्रश्न किया है कि एक तो भगवान का त्यागी भक्त है। वह शरीर से सभी धर्मो का पालन करता है। लेकिन अंदर से विषयवासना का रस रखता है। तथा दूसरा भक्त धन और स्त्री का सुख रखता है। लेकिन अन्दर से शुद्ध है। जब वे दोनो मृत्यु को प्राप्त होगे तो क्या समान गति होगी या कम या अधिक ? तभी स.गु. गोपालानंद स्वामीने कहा जो त्यागी भक्त है। समय का पालन करता है। तथा शरीर से भ्रष्ट नही हुआ है। तथा अंदर विषय वासना तीव्र है। क्या ये लोग भगवान के चरणो में रहेगे।

स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामी जी पूछे जिसकी दृढ वासना उसे जिसे त्यागने की शक्ति हो, उसे हराने उपाय क्या है। महाराज बोले जिस प्रकार उका खाचर को संत सेवा की आदत पड गयी है। उसी प्रकार भगवान तथा उसके संत सेवा विना एक क्षण भी नही रह सकते है। अन्तःकरण की मलिनता दूर हो जाती है।

बाद में स्वयंप्रकाशानंद स्वामीने प्रश्न पूछा कि हे महाराज क्या करने पर भगवान अधिक खुश रहे ! ऐसा क्या साधन है ? महाराजने उत्तर दिया कि जब घर में एक मन अन्न मिलता हो जब भी संत के उपर प्रेम बना रहे। वही व्यक्ति सामान्य से अति सामान्य हो जाये तब भी संत के उपर प्रेम करता रहे। ऐसे व्यक्ति से भगवान सदैव खुश रहते है। यह बात भगवानने वचनामृत में समझाया है। हम लोग सब कुछ जानते हुए भी गढ्ढे मे गिर जाते है। वह स्थिति है जैसे एक बालक कीचड वाले मिटी में गिर कर आवाज करने लगता है। कभी-कभी सज्जन व्यक्ति उसे उठाकर बाहर निकाल देता है। मानव में दया का भाव आ ही जाता है।

दूसरी तरफ एक लडका होता है जो गंदे पानी में खेलता है। बालक को यह खेल अच्छा लगता है। उसे कोई व्यक्ति देख लेगा तो बाहर निकाल देगा। और बोलेगा गंदे पानी में नही खेलना चाहिए। सब कुछ गंदा हो जायेगा। बालक रोने लगता है। राहगीर को विश्वास हो जायेगा। यदि मै इसे कीचड से बाहर कर दूँगा तो फिर वह रोने लगेगा। वह देखकर हसते हुए चला जाता है। बालक को ज्ञान नही रहता है। इसलिये वह गंदे पानी में खेलता रहता है।

उसी प्रकार इस जीव की भी अवस्था होती है। यह मायारुपी विषय वासना वाले गंदे पानी में हम सब खेलते रहते है। कुछ तो आनंद मिलता है। कुछ लोग उसमें रहकर रोते रहते है। जो व्याकुल होकर रोता है। उसे प्रभु बाहर निकाल देते है। जिसे आनंद आता है। वह व्यक्ति रोता नही है। छोटे बच्चे की तरह उसमें से प्रभु निकाल दे तो हम रोने लगते है। इस कारणे स प्रभु दूसरा मार्ग अपनाते है। हमे जिसमें आसक्ति होती है। उसे छीन लेते है। तो भी हम दुःखी होकर रोते है। कि महाराजने

मेरा ले लिया । अर्थ यह है कि जब हम वासना में फँसे रहते है तो हमारी अज्ञानता पर हँसते है । जब दयालु प्रभु उसमें से बाहर कर देते है । लेकिन महाराज अलग प्रकार से निकालते है । भगवान हमे अनासक्त बनाते है । हमे दुःख देकर वैराग्य की भावना दृढ करना चाहिए । अंदर से प्रार्थना करना चाहिए । अंदर के दो आँसु गिराने से प्रभु बाहर निकाल लेगे । जिस प्रकार माँ देखती है मेरा बच्चा गंदे पानी में खेल रहा है । रोने के बाद भी बाहर कर देती है । हमारे जीवन में जब विपरीत समय आये तो प्रभु से बाहर लाने की याचना करना चाहिए । संसार में रहकर भगवान को अर्न्तमन से याद करना चाहिए ।

जीवन में तीन बाते सामान्य होनी चाहिए । जिसे आप का जीवन सरल बना रहता है । विचार, प्रेम, नियम ।

(१) विचार : आप की बुद्धि शुद्ध विचारो वाली होनी चाहिए विचार हंमेशा पवित्र रखे । महाराजने हम सभी को सत्संग का अमूल्य धन दिये है । सत्संगी को अपने मन में उठने वाले सभी विचारो का साथ नही देना चाहिए । क्योंकि शरीर के अन्दर संचित कर्म के आधार पर मनोग्रन्थियाँ बनती है । कौन सा विचार लेना है यह हम पर निर्भर करता है ।

(२) प्रेम : आप के अंतर में शुद्ध प्रेम होना चाहिए । वीतरागता अंदर के प्रेम से मिलता है सम्पूर्ण वीतराग अर्थात् वैराग्य की भावना का होना है । जिसका वर्णन महाराजने शिक्षापत्री में किये है । भगवान के अलावा कई पर प्रेम नही रखना चाहिए । शुद्ध वैराग्य भाव जो पूरा अनासक्त भाव बाला होता है । सत्संग के माध्यम से भगवान के सिवाय कही भी प्रेम न रहे । ऐसी सम्पूर्ण वीतरागता होनी चाहिए ।

(३) नियम : सोने से पहले भगवान को स्मरण करना दिन भर आप मेरे साथ रहते है । इस प्रकार भगान को धन्यवाद देना चाहिए । प्रात उठने पर प्रभु का नाम लेना चाहिए । सारी रात आपने रक्षा किया तभी प्रात, उठ पाये है । तो ही प्रातः उठ सकते है । भोजन तैयार करने के बाद भगवान को भोग लगाना चाहिए । तत्पश्चात भोजन करना चाहिए . भोग लगाने से अभक्ष्य आहार स्वतः दूर हो जायगा । जो भोजन भगवान के लिये भोग लगता है । वह हम अवश्य खा सकते है ।

इस प्रकार सभी कार्य धर्म मय हो जाता है । भक्ति करने का मन करने लगता है । भक्ति से आत्मज्ञान में वृद्धि होती है । इस ज्ञान से अनाशक्त बनते है । इस प्रकार प्रभु खुश रहते है । जगत की वासना और क्रोधसब भगवान का व्यसन करने से छूट जाता है । महाराज आप सभी को वैराग्य की भावना बढाये यही महाराज के चरणो में प्रार्थना है ।

•

भगवान के उपर पूर्ण विश्वास

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

कंथकोट गाँव में पदमशी नाम के एक परम एकान्तिक भक्त थे । वडताल में श्रीजी महाराज का मुकुट पहनने का समय था । पदमशी गाँव के बातचीत किये । आइये हम सब मिलकर समैया का दर्शन करने वडताल चले । भाई और बहन सभी लोग समैया में जाने के लिये तैयार हो गये। गाडी में सामान रखकर पैदल जाने लगे । रास्तें खुशी से कीर्तन करते जा रहे थे ।

“हू तो जईस गीरधर जोवा रे, मा मने वारीश में,
मारा उर मां छबीलाजीने जोवा रे, मेणेल मारीश मां
जईश जोआ हु तो नंदलाल नो लालो,
हांरे मने पर स्नेही लागे बहालो रे, मा मने....

कटारिया रण गांव में आ गये । आधी रात हो चुकी थी । तब तक सात-आठ लूटेरे आ गये । और आवाज देकर रोक दिये । मारपीट कर ही छोडेगे । चारो तरफ से घिर गये थे । यात्री काँपने लगे । अचानक क्या

करे, हम क्या करे । ईतने में लूटेरे सामान रखने को कह दिये । और न करने पर जान से मारने का भय दिखा रहे थे । भक्तजन रोते हृदय से प्रभु को याद किये ।

"प्रभु दुःख, दरियामां घी तारो,
वहाला आ समये वहेला पधारो
संकट थी बचाओ मुरारी
लेजो अन्तर्यामी उगारी"

भगवान मदद के लिये आ गये । खट घोडे पर आ गये । जरकशी वाला जामा, पीलापीताम्बर के साथ मुकुट हाथ में ढाल, तलवार और भाला भी था। साथ में पचास काठी धुडसवार दरबार प्रभु को याद किये । मेरी भक्त की परेशान करोगे तो मै जान से मार दूँ गा । तलवार भाजते जाते थे । चोर डर गये । शेर के सवा शेर आ गये । पापीयो हमारे भक्तो को परेशान कर रहे हो आज किसी को शरण नही मिलेगा । चोर ईधर-उधर भागने लगे थे । चारो तरफ काठी भाला लेकर खडे है । ये जाये तो कहाँ....चोर कभी रोते नही है । लेकिन भाला के प्रहार से रोने लगे । रोते-रोते बोले अब कभी चोरी नही करेगे । हम आप के शरण मे है । आज से आप सभी प्रतिज्ञा करे की हम चोरी, लूट नही करेगे । हंमेशा परिश्रम करके जीवन-याचन करेगे ।

श्रीजी महाराज हरिभक्तो से बोले हम आप लोगो के साथ ही है । आराम से वडताल जाये । वही पर मिलेगे । यह कर प्रभु अदृश्य हो गये । श्रीजी महाराज अपने भक्तो की सदैव रक्षा करते है । अर्जुन की सहायता करके भीष्म से भी विजय दिला दिये थे । भगवान की सहायता से क्या नही हो सकता है । मै जीता ऐसा शूरवीर नही बोलते हे । अहम नही आता है । हमें अहंकार न करके अभियान को त्याग देना है ।

हूँ हूँ करने से हरि नही मिलते है । चौरासी में भटकना पडता है । जिसे सत्संग में आगे रहना हो उसे सर्वगुण सिखना चाहिए ।

नकामी कुथली केटली करी
धर्मनुकार्य केटलु कर्य, तपास करो...

भक्त उपर कष्ट आने पर प्रभु रक्षा करते है । शर्त केवल ईतनी है कि भगवान के उपर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए ।

(अनु. पेईज नं. २० से आगे)

। हे महात्मा मैं आप के प्रति भाव रखता हूँ इस लिये प्राथमिक सूचना दे रहा हूँ । इस लिये कल मैं दर्शन के लिये नही आ सकता हूँ ।

दिवान यब बात करके बाहर आ गये । और अपने गुप्तचरो को ध्यान रखने के लिये कह दिये । मंगलवार प्रातः गुप्तचरो ने दिवानजी को सूचना दिये कि ''संत रात भर ईघर-उधर घुमते रहे, अधिक धबराये हुए थे प्रातःकाल मृत्यु की प्राप्त हो गये ।'' दिवानने पूरी बात राजा को बता दिये । अच्छा हुआ अच्छे संत का ज्ञान नही मिला । यह तो मात्र दिखावटी थे । बने संत को पहचान सके। दिवानजी तुलसीदास महात्मा के प्रति आभार व्यक्त किये ।

मित्रो आपने देखा ! विना भोजन के मान सन्मान के द्वारा जिया जा सकता है । इस घटना से यह पता चलता है । याद रहे बडे में बडी कमी सम्मान दोष होता है । जो भक्तिमार्ग में रोक लाता है । इस लिये स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में यह घटना याद कराये है । ''मान का त्याग करके जो भक्त भजन करता है वह सबसे उच्च गुणवाला भक्त होता है ।

(इति वचनामृत ग.म.-४१)

ઉત્તરાયણ પુણ્ય (ઝોળી) પર્વ

નામ : ....

સરનામું : ....

ફોન નં. : .... મો. : ....

ઉત્તરાયણ પુણ્ય પર્વ

તા. 14-1-2021ના ઉત્તરાયણ - મકરસંક્રાંતિના શ્રી નરનારાયણદેવના દર્શને પધારો ત્યારે આ કાર્ડમાં આપની ઈચ્છાનુંસાર રકમ ભરી કોઠાર ઓફિસમાંથી પહોંચ મેળવી લેવી. દૂર વસતા હરિભક્તોએ ચેક - ડ્રાફ્ટ અને ઓનલાઈનથી રકમ મોકલવી.

વિગત	ભાવ રૂ.	વજન	૫ કિલોના ભાવ રૂ.	આપની સેવા રૂ.
ચોખા	૩૦૫૦	૧૦૦ કિલો	૧૫૫	
ઘઉં	૨૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૦૦	
મગ	૮૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૪૦૦	
તલ	૨૪૦૦	૨૦ કિલો	૬૦૦	
ચણા દાળ	૨૪૦૦	૨૦ કિલો	૬૦૦	
તુવેર દાળ	૧૦૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૫૦૦	
મોગર દાળ	૭૨૦૦	૧૦૦ કિલો	૩૬૦	
શુદ્ધ ઘી	૬૦૦૦	૧ ડબો	૨૦૦૦	
તેલ	૧૩૦૦	૧ ડબો	૪૩૦	
ગોળ	૫૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૨૫૦	
ખાંડ	૪૧૦૦	૧૦૦ કિલો	૨૦૫	
કુલ રૂ.	૫૧૪૫૦		૫૬૦૦	

દાન, વસ્તુ રૂપે, રોકડ સ્વરૂપે તથા ચેક અથવા ડ્રાફ્ટ
"શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર અમદાવાદ"ના નામે આપશો.
સ્થળ : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ ફોન : ૮૨૩૮૦૦૧૬૬૬

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४८ वे प्रागट्योत्सव पर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४८ वे प्रागट्योत्सव (कोरोना काल में सरकारी नियमानुसार) आसो सुद-१० विजया दशमी ता. २५-१०-२०२० रविवार के दिन सामान्य रुप से मनाया गया था । सर्वप्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती करके दर्शन किये तथा सभा में बैठे थे । कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स्वामी, जेतलपुर, नारणपुरा, गांधीनगर से-२, कांकरिया, नारायणघाट, एप्रोच आदि तीर्थो से संत महंतश्री प.पू. महाराजश्री को हार पहनाकर शुभेच्छा दिये । अत्यन्त सरलता के साथ जन्मोत्सव मनाया गया था । (कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर शरदोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य स.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से आसो सुद-१४ ता. ३०-१०-२०२० शुक्रवार के दिन शरद पूनम को परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य प्रसादी के चौक में शरदोत्सव परम्परागत रुप से मनाया गया था ।इस अवसर पर संत-हरिभक्त और श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल द्वारा (सरकार के नियमानुसार) ओच्छव मनाया गया था । इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री ठाकुरजी की आरती किये थे ।सभीने दूधपौआ का प्रसाद लेकर धन्य हुए । (चंपकभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर दिवाली के उत्सवो को मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में दिवाली उत्सव अच्छे से मनाया गया था ।(कोरोना काल में सरकारी नियमानुसार)

दूसरा आसो वद-१४ ता. १४-११-२०२० शनिवार के दिन सायं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा परम्परागत रुप में मंदिर के शास्त्री गोर द्वारा किया गया था । इसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री काली चौदश से अवसर पर श्री हनुमानजी की पूजा अर्चन करके अन्नकूट की आरती किये थे । दिवाली आसो सुद-३० ता. १५-११-२०२० रविवार के दिन प्रात:१० बजे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवो की छप्पनभोग अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने उतारी थी ।

कार्तिक सुद-१/२ नये वर्ष ता. १६-११-२०२० सोमवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव दर्शन करके बैठक में सभी संत-हरिभक्तो को नये वर्ष का आशीर्वाद दिये थे ।

पूज्य महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार शास्त्री गोलोक स्वामी, स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी, शा. सत्यप्रकाश स्वामी आदि संत मंडल और हरिभक्त श्री नरनारायणदेव देश के गाँवो में समयसर अन्नकूट प्रसाद पहुचाने की सुंदर सेवा दिये थे ।(कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (नालंदा-२)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (नालंदा-२) मे अधिक पुरुषोत्तम मास में पूरे वर्ष आने वाले

उत्सव मनाये गये थे । ता. १६-१०-२०२० अमावस्या को यहाँ मंदिर के पूजारी श्रीकृष्ण महाराजने विविधरुप से अभिषेक किये थे । के.वी. प्रजापति चंचल भगत, श्री घनश्याम महिला मंडल की प्रमुख रंजनबेन आदिने अपने घर से ठाकुरजी के लिये विविधअन्नकूट बनाकर श्रीहरि को चढाये थे । सरकारश्री के निर्देशानुसार नियम का पालन किया गया था ।(के.बी. प्रजापति - मोडासा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. चूडा) ७वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल का ७वाँ पाटोत्सव कार्तिक सुद-७ ता. २१-११-२०२० के दिन मनाया गया । सत्संगी बहनोने घर से पवित्र भोजन बनाकर ठाकुरजी का अन्नकूट भोग लगाई थी ।

इस मंगलपूर्ण समयपर सभा में मूली मंदिर के स.गु. शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी, सायला मंदिर के महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा लिंबडी मंदिर के नये महंत स्वामी तथा सभी भक्तगण महाराज के लीला चरित्र का वर्णन करके ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाये थे। आरती भी किये थे । एकादशी के नियमनुसार सभीने दर्शन का लाभ प्राप्त किये ।(नरेन्द्रभाई कोठारीश्री - कारोल)

श्री स्वामिनारायण मासिक का सभी सदस्यो हे तु सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी ग्राहक सदस्यो से विशेष आग्र है कि वे अपना सदस्यता क्रमांक, नाम, मोबाईल नं. शीघ्रातिशीघ्र अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव मंदिर स्वामिनारायण मासिक के कार्यालय में भेजने का कष्ट करें ।

मंदिर के क्रिया-कलाप, मासिक के विषय में शिकायत । सुझाव आप के मोबाई नंबर पर उपलब्धहै ।

नीचे दिये गये मंदिर के मोबाईल नंबर के उपर आपश्री **SMS** अथवा **Whatsapp** के उपर आप अपने जानकारी प्राप्त कर सकते है ।

मोबाईल नं. : ९३१३७०६०९५

श्री स्वामिनारायण मासिक सदस्य का विवरण

सदस्य क्रमांक ....

सदस्य का नाम ....

मोबाईल नंबर (१) ....(२) ....

गाँव/शहरका नाम .... ता. .... जि. ....

सूचना : उपर लिखित सूचना मार्च-२०२१ तक अवश्य प्रेषित कर दे । यदि हमे आप की सूचना नही प्राप्त होगी तो आप का श्री स्वामिनारायण अंक की सदस्यता निरस्त की जा सकती है । कृपया इस बात पर विशेष ध्यान दे ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

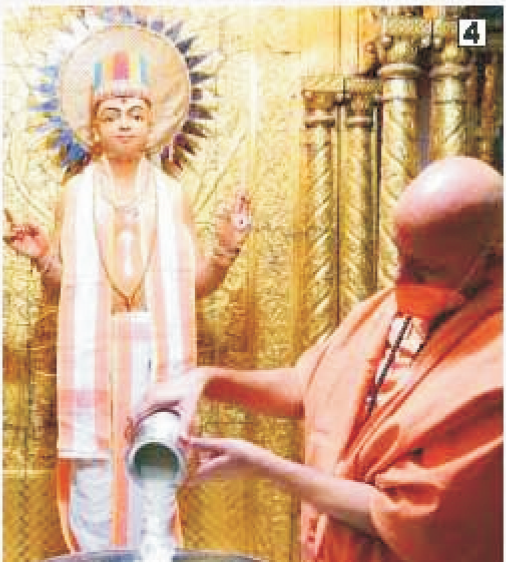

(१) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्राकट्योत्सव अवसर पर संतो का अभिवादन स्वीकारते हुए तथा पू. महंत स्वामी द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन करते हुए प.पू. महाराजश्री। (२) कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में समूह चोपडा पूजन करते तथा काली चौदश को हनुमानजी की पूजा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री। (३) जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारते प.पू. बडे महाराजश्री। (४) कालुपुर मंदिर, रंग महोल में पाटोत्सव के अवसर पर श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक करते पू. महंत स्वामी। (५) नारणघाट मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का अन्नकूट दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

(१) सीनेमिन्सन (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर में नूतनवर्ष का अन्नकूट दर्शन। (२) राले मंदिर में अन्नकूट दर्शन। (३) पारसीपनी मंदिर में दिवाली के समय दीप आरती के समय का दृश्य। (४) इन्डस्वीले मंदिर में दिवाली-अन्नकूट का दर्शन। (५) अपने करांची स्थित मंदिर में दिपावली की लाईटिंग से शोभित प्रवेश द्वार।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये
आनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।
htpp://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani